ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 131-134

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

नये प्रतिमान स्थापित करने वाली कहानीकार लवलीन

डॉ0 अरूण कुमार वर्मा

असि0 प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, एम0डी0पी0जी0 कालेज, प्रतापगढ़ (उ0प्र0), भारत

Received- 13 .11. 2021, Revised- 18.11. 2021, Accepted - 22.11.2021 E-mail: arunverma552012@gmail.com

सारांशः *असमानता पर आधारित भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक संरचना और खोखली नैतिकता का विरोध करने वाली पत्रकार और रचनाकार लवलीन (1958–2009) के दो कहानी–संग्रह 'सलिल सागर कमीशन आया बनाम समाज सेवा जारी है' (1997) और 'चक्रवात' (1999) प्रकाशित है। स्वभाव से ही बागी लवलीन अपनी कहानियों के माध्यम से असमानता पर आधारित सामाजिक संरचना का खुल कर विरोध करती रही हैं। वे उन प्रचलित प्रतिमानों के खिलाफ लगातार बगावत करती रहीं, जो चेतना को कुंद करते हैं। उनकी कहानियों में चेतना और छद्म–चेतना की बारीकी मिलती है। कहानी संग्रह 'चक्रवात' की बात की जाय तो इसमें तो इसमें कुल बारह कहानियां हैं। तीन कहानियों में भ्रष्टाचार और अन्य राजनैतिक मुद्दे है।'उसके सुख का सपना' गरीबी और भ्रष्टाचार के खिलाफ एक बच्चे के प्रतिरोध की कहानी है।'बजरंग के जाने का मतलब' सामाजिक परिवर्तन में अगुवा नेता के जरूरत की पड़ताल है तो 'राज्यादेश' कहानी राजनीतिक व्यंग्य है, जिसमें राज्य की दमनकारी नीतियों का पर्दाफाश बहुत मार्मिक अन्दाज में हुआ है। बाकी की नौ कहानियां 'प्रेम से पहले','छिनाले','रास्ता आसान नहीं', 'नहीं, यह नहीं. मुकाम', 'गलत समय की हंसी','चक्रवात','एक और स्मिता', 'सिर्फ हमारे दिल में', तथा 'दो ध्रुवों के बीच' मध्यवर्गीय स्त्री के बहाने स्त्रीमुक्ति और उससे जुड़े तमाम मुद्दों को उठाती है। उनकी ज्यादातर कहानियाँ समाज में स्त्री की स्थिति और उसकी मुक्ति के सवालों से टकराती–जूझती है। उन्होंने निजी जीवनानुभवों को सामाजिक चेतना के साथ बड़ी आत्मीयता से कहानी में बुना है। उनकी कहानियां आत्मीय है पर नितांत आत्मपरक नहीं है। वे निजी अनुभवों को अपनी कहानी में इस खूबी से रखती है कि पाठक को वे अनुभव पात्र, परिस्थितियाँ, बातें, वातावरण अपने आस–पास की खूब देखा–परखा, जाना–सुना लगने लगता है। पाठक जब लेखक के निजी अनुभव से जुड़ाव महसूस करने लगता है तो वह रचना से भी अपनापन महसूस करता है और उसके मर्म तक आसानी से पहुंच जाता है।*

कुंजीभूत शब्द– सांस्कृतिक संरचना, खोखली नैतिकता, चक्रवात, सामाजिक संरचना, भ्रष्टाचार, पर्दाफाश, आत्मीयता।

लवलीन स्त्री–पुरुष संबंधों में आए बदलावों को लेकर काफी सजग हैं। वे भली–भांति जानती थीं कि भारतीय सामाजिक संरचना में स्त्री को हर समय, हर जगह कमतर ही आंका जाता है। फिर चाहे वो स्त्री किसी भी जाति, धर्म, वर्ग की हो। उन्होंने स्त्री–पुरुष सम्बन्धों को अलग–अलग कोणों से देखापरखा, जो सही लगा वही लिखा। उन्होंने कहानी में सेक्स सीन चित्रित किए तथाकथित अकेली, बदनाम स्त्रियों को कहानी का पात्र बनाया मर्यादित स्त्री छवि को तोड़ा लीक से हटकर चली इसीलिए उन्हें 'बोल्ड लेखिका' कहा गया। शायद यही बोल्डनेस थी जिसके चलते उनका निजी जीवन भी प्रभावित हुआ। मधु अरोड़ा को दिए एक साक्षात्कार में जब उनसे पूछा गया कि बोल्ड लेखिका होने के नाते क्या उन्हें कोई कीमत चुकानी पड़ी, तो जवाब में वे कहती है "मुझे इसकी खासी कीमत चुकानी पड़ी है। स्त्री की स्वायत्तता उसके निजी संबंधों की बलि पर ही संभव है"[1] आज भी निडर और बोल्ड स्त्री को समाज आसानी से स्वीकार नहीं कर पाता। लेखन हो या जीवन स्त्री के हर कदम पर समाज की निगाह होती है। घोषित–अघोषित कुछ नियम होते हैं जिन्हें नजरअन्दाज करने की कीमत चुकानी ही पड़ती है।

लवलीन अपनी कहानियों में ज्यादातर मध्यवर्गीय स्त्री चरित्र बुनती है, जो नौकरीपेशा है, उनकी अपनी पहचान है, वे आत्मनिर्भर है और यह भी है कि ज्यादातर तलाकशुदा है या अकेली रहती है, कहने को आजाद है; पर सही मायने में आज भी मुक्ति से कोसों दूर हैं। स्त्री मुक्ति की पक्षधर रचनाकार लवलीन तथा कथित चरित्रहीन, बदनाम स्त्री पात्रों को उनकी समस्त कमियों कमजोरियों के साथ कहानी में चित्रित करती हैं।

उनकी एक कहानी 'रास्ता आसान नहीं' ऐसी ही दास्तां है। कहानी की मुख्य चरित्र अनुपमा बैंक ऑफीसर है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है। तलाकशुदा है और अकले रहती है इसलिए "लोगों की जुगुप्साओं, दमित इच्छाओं और बतरस का केन्द्र थी। कालोनी के पुरुषों के लिए वह एक चीज थी। उनकी अपनी घरनियों से अलग एक स्त्री जिसके बारे में कुछ भी सोचा और कहा जा सकता है। वह उनकी प्राइवेट फॅटेसियों की शूरवीर नायिका थी।"[2] उसके बारे में तमाम तरह की अफवाहे कालोनी में फैली थीं। एक शादीशुदा पुरुष से उसके अंतरंग संबंध थे। मुहल्ले का गुंडा बलदेव एक रात शराब पीकर अनुपमा के घर में घुसना चाहता है। उसे लगता है अनुपमा अगर एक से सम्बन्ध रख सकती है तो उसका भी हक बनता है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

उसके वे इरादे पूरे नहीं होते तो यह अनुपमा के दरवाजे पर खूब हंगामा करता है। उसे धंधा करने वाली कहता है। महिला समिति से जुड़ी एक पड़ोसी महिला अनुपमा को बलदेव के खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट करने की सलाह देती है तो बलदेव के साथ अनुपमा और वह पुरुष भी घबरा जाता है। वह अपनी उपस्थिति सबसे छुपाना चाहता है। "अनुपमा जिसकी खातिर बदनामी और संकट झेल रही थी, वह इस मौके पर अपना दामन बचा रहा था। स्त्री प्रेम में सर्वांग समर्पित होती हैं वह अपने आप को दांव पर लगा देती है... और पुरुष मौकापरस्त शिकारी की तरह व्यवहार करता है।[3] भक्षण किया और भाग छूटा"कुछ दिनों बाद सब सामान्य हो जाता है। उस पुरुष की जगह अब बलदेव अनुपमा के घर आने लगा था। इसकी सफाई देते हुए जब अनुपमा कहती है "मेरा तो उनसे भाई जैसा रिश्ता है। अब आगे का रास्ता देखने के लिए प्रयोग तो करने ही पड़ते हैं। जिन्दगी भर अकेला फोन रह सकता है"[4] तो कहानी की वाचक कहती है "प्रयोग के नाम पर वह एक और छलावे को निमंत्रण दे बैठी थी। वैचारिक .ष्टि से रिक्त स्वतन्त्र महिलाओं का यही हश्र होता है, एक चंगुल से निकल कर दूसरे चंगुल में फंस जाती है..... अलगाव की सजा झेल रही थी क्योंकि तलाकशुदा थी जिजीविषा उसे जिलाये रखे है। मन और देह की आग आहुतियां मांगती है। लेकिन रास्ता आसान नहीं है।"[5]

स्त्री अगर पुरुष की सुरक्षा के बिना अकेले रहने का निर्णय करे तो ये सचमुच आसान नहीं गिद्ध नज़रे गढ़ाए उसे नोच खाने वाले हमेशा मौके की फिराक में रहते हैं। ऐसे में अगर वह अपनी शारीरिक–मानसिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए किसी पुरुष से नजदीकी बढ़ाए तब तो समाज उसके अस्तित्व और अस्मिता की धज्जियाँउड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ता। ऐसे में स्त्री ही कलंकित प्रताड़ित की जाती है। समाज से बहिष्त की जाती है भागीदार पुरुष नहीं। बलदेव जैसे लोगों से समझौता करना सही रास्ता नहीं कहा जा सकता, लेकिन हमारा समाज अनुपमा जैसी स्त्रियों को ऐसे समझौते करने पर मजबूर करता है। शायद अनुपमा किसी छलावे में नहीं थी। वह अकेले रहती है। घर आने वाले पुरुष की जगह अब बलदेव ने ले ली है। मतलब ये प्यार का मामला नहीं सेक्स का मामला था। उसे पुरुष दोस्त इसीलिए चाहिए जिससे वह अपनी दैहिक जरूरतों को पूरा कर सके। ये उसका निजी मामला है। इसके लिए अगर वह विवाह संस्था का लाइसेंस नहीं लेती तो इसके कई कारण हो सकते हैं। हो सकता है वह अपनी शादी का हश्र देखने के बाद फिर से इस तरह के बन्धन में बंधना नहीं चाहती हो या पुरुष ऐसी स्त्री को भोगना तो चाहता हो पर शादी नहीं करना चाहता हो।

इसका उत्तर हमें 'प्रेम से से पहले' कहानी में मिलता है। यह भी तलाकशुदा स्त्री की कहानी है। जो एक पुरुष की तरफ आकर्षित होती है लेकिन प्रेम से पहले डर हावी होता है। वह असमंजस में थी। भीतर से उठती चेतावनियां। तुम.... फिर खतरा उठा रही हो। दांव पर लगा रही हो अपनी स्वतंत्रता..... निजता। वह बहरी बनी हुई थी और प्रतीक्षा के आकुल बनाव में थी। "वह जीवन फिर से शुरू करना चाहती है। अकेला रहना आसान नहीं है। पुरुष जब कहता है और तुम तो आजाद हो 'फ्रीबर्ड'।"[6] तो वह उसे समझा नहीं पाती कि "इस आजादी की अपनी गुलामी है। पुराने अनुभव और फिर अन्तरंग संबंधों में जो जकड़न होती है। एक बार भुगतकर आजाद होने बाद भी आजाद होने नहींदेती।"[7] वह स्त्री को नियन्त्रित और शासित करने के 'मेनहुड ओरियंटेशन' से आजादी चाहती थी। 'प्रेम से पहले' कहानी की पात्र और अनुपमा दोनों स्त्रियां आजादी की चाह में आजादी की कैद भुगत रही हैं।

भारतीय समाज में स्त्री को देखने के मोटे तौर पर दो नजरिए प्रचलित है; एक 'देवी' और दूसरा 'छिनाल'।'देवी' बनने से इन्कार करने वाली स्त्री को भारतीय समाज में अलिखित कानून के तहत अक्सर 'छिनाल' मान लिया जाता है क्योंकि हमारा समाज आज भी स्त्री को अपने जैसा मनुष्य नहीं मान पाया है। विडम्बना है कि स्त्री को समाज 'देवी' माने या 'छिनाल' दोनों ही स्थितियों में उसके हिस्से शारीरिक मानसिक शोषण, अपमान, प्रताड़ना और अकेलापन ही आता है। देवी बनी स्त्री कोकुछ भी महसूस करने, बोलने, सोचने की मनाही है, बेजान मूर्ति की तरह। खुलकर हंसना, ठहाके लगाना, बिंदास बोलना, दोस्त बनाना, घूमना–फिरना, निर्णय लेना या फिर गलतियां करना जैसे मानवीय व्यवहार भी स्त्रियों के सन्दर्भ में सामान्य नहीं रह जाते। ऐसे में सिगरेट–शराब पीने वाली और पुरुष मित्रों के साथ घूमने वाली, अश्लील मजाक करने वाली, सेक्स की इच्छा रखने वाली या सेक्स के लिए मना करने वाली स्त्रियों के बारे में तो कहना ही क्या, वे तो घोषित छिनालें हैं। ये सारे काम जहां पुरुषों को मर्द बनाते हैं वहीं स्त्री को 'छिनाले'। देवी और छिनाल के खांचे में देखी गई स्त्री के लिए मुक्ति के मायने क्या है? 'छिनाले' कहानी इसी विषय के इर्द–गिर्द बुनी गई है।

इस कहानी में वकील, सामाजिक कार्यकर्ता, समाज कल्याण विभाग में मंत्री और ब्यूटीशियन जैसे अलग–अलग पेशों से जुड़ी औरतों का 'जमावड़ा' साथी महिला के घर पर होता है। दारू पार्टी होती है "समाज के सामने ये स्त्रियां'अलस घरेलूपन' के बजाय 'व्यावसायिक चौकन्नेपन' के साथ नाटकीय भव्यता ओढ़े अपने अच्छे–बुरे अनुभवों को छिपाए रहती हैं। वे जानती है, बाहर आकर उन्हें अंधे रस्मों–रिवाज की कायनात में पटक दिया जाना है। सजा भी मुकर्र हो सकती है।"[8] इसलिए

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

वे आसानी से नहीं खुलती। आत्सम्मान की बलि पर सफल हुई या सफलता को बरकरार रखे ये औरते जब खुलती है तो हंसी–मजाक के बीच।''तनाव और उत्तेजना की भाप में सुगबुगाती सभी अपनी औपचारिक काया को छोड़कर निर्वस्त्र हो नंगी आत्मा के साथ जिरह करती है''[9] इस क्रम में मध्यमर्गीय, निम्नमध्यवर्गीय समाज का असली चेहरा उजागर होने लगता है। मुक्त स्त्री का भ्रम देती ये स्त्रिया आजादी के लिए छटपटाती नजर आती है।

'छिनाले' कहानी की निशा ''बेहद गरीब परिवार से थी। कैरियर की शुरुआत स्टेनो के रूप में की थी। नौकरी बनाये रखने के लिए मजबूरी में मालिकों को खुश किया था। अन्ततः दस साल बाद की एक अधेड़ मालिक को, कहते हैं ब्लैकमेल कर ब्याह रचाकर उच्चवर्ग में प्रवेश पाया था और सम्मान की जिंदगी प्राप्त की थी। उसने सोचा कि उसने सदा के लिए शोषण के दुश्चक्र से मुक्ति प्राप्त कर ली है, लेकिन अब उसे छिपे तौर पर हर आसामी से डील करना पड़ता था, जो उसके उद्योगपत्ति पति के बिजनस में इजाफा कर सके। उसके दिन–रात इसी सोशलाइजेशन में बीतते थे। धधकती हुई–सी वह हमेशा जली–कटी बातें करती थी''[10]। निशा मर्दवादी समाज को शायद कम करके आंक रही थी। उसे लगा था कि निम्न वर्ग से उच्च वर्ग में शिट होने मात्र से सब बदल जाएगा, लेकिन ऐसा होता नहीं है। इससे समाज के मूल चरित्र में कोई बदलाव नहीं होता है।

सफलता पाने के मार्ग में कदम–कदम पर समझौता करने वाले तथाकथित सफल होने के बाद भी अपने चरित्र में कोई सार्थक बदलाव नहीं कर पाते। सफलता पाने के लिए अपनी सींग–पूँछ कटवा चुके, ये लोग बिना रीढ़ के प्राणी की तरह अपना पूरा जीवन गुजार देते हैं या फिर सत्ता में आते ही 'सत्ता का चरित्र; अख्तियार कर दूसरों का शोषण करने लगते हैं फिर चो चाहे स्त्री ही क्यों न हो। एक तरफ निशा है तो दूसरी ओर छिनालें कहानी की कुलदीप। वो महिला विकास कार्यक्रम की सम्बद्ध अधिकारी है। अपने ड्राइवर का शारीरिक शोषण करती है। वो कहती है ''मुझे देखो ऑफिस में बॉस हूँ और उतनी ही अक्रामक, प्रतिस्पर्धा भरी और अपने मातहतों के साथ हिंसक हूँ जितने पुरुष हमारे साथ। मैं शायद औरत भी नहीं बची हूँ, पुरूष बन गई हूँ।''[11] यही सत्ता का मूल चरित्र है, जहां हमारी अस्मिताएं सिर्फ उत्पीड़ित और उत्पीड़क की होती है।

लवलीन के लेखन में अन्तर्वस्तु की नवइय्यत ही नहीं, टेकनिक का नयापन भी खूब मिलता है। कहानी कहने का नयापन वर्जित क्षेत्रों को विषय बनाने के क्रम सृजित हुआ है। वे 'ह्यूमन सायकॉलाजी' के आधार पर मानव मन की गहराईयों समझने–समझाने की कोशिश करती नजर आती है। स्त्री–पुरुष की पड़ताल करती चक्रवात कहानी की टेकनिक अनूठी है। एक ही घटना को दो नजरिए से पेश किया गया है। एक बार स्त्री नजरिए से और दूसरी बार पुरुष नजरिए से। इस कहानी की पात्र कीर्ति और रणजीत दोनों दोस्त थे न इससे कुछ कम न इससे कुछ ज्यादा । दोनों शादीशुदा है। कीर्ति रणजीत से मिलने उसके घर आती है। पत्नी बाजार गई है। ऐसे में दोनों के बीच शारीरिक संबंध बनते हैं। स्त्री पुरुष मित्रता, यौनाकर्षण, विवाहेतर सेक्स संबंध आदि को कई कोणों से जाँचती यह लम्बी कहानी है। 'नहीं .... यह नहीं..... मुकाम' भी इसी विषय पर है। इस कहानी में ''अरुणा जिस दिन मित्र सुकान्त की आखों में अपनत्व की जगह उसे पा लेने की हिंसक चमक देखती है समझ जाती है कि पुरुष से मैत्री एक दिन प्राप्ति की मांग बनकर सामने खड़ी होती है।''[12] अरुणा सुकान्त की माँग को नकारते हुए उससे मिलना बन्द कर देती है। उसे अपराधबोध होता है कि वह मित्रता से अनायास ही उन दोनों की गृहस्थी में घुसपैठ कर गई। जैसा कि हमेशा होता आया है। हर बार स्त्री को ही अपराधबोध होता है, भले ही अपराधी पुरुष हो या परिस्थितियाँ। उत्तेजना के आवेग में कीर्ति को पछतावा होता है लेकिन रणजीत को नहीं। दोनों कहानियों में प्राप्ति की मांग पुरुष करता है पर परिणाम और अपराधबोध स्त्री को होता है। मधु अरोड़ा को दिए साक्षात्कारमें लवलीन कहती है–''पुरुष जब दोस्ती/प्रेम करता है, वह औसत पुरूष ही होता है, मनुष्य नहीं वह अपनी कल्पनाएँ फैन्टेन्सियों और यौनिकता तथा सामाजिक दबाव के कारण इतना कुंठित होता है कि स्त्री–पुरुष के आपसी संबंधों का सहज विकास संभव ही नहीं हो पाता।''[13]

लवलीन की कथाभाषा के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि वहां स्त्रियोचित सुघडता मानवीय संवेदनशीलता और ममतामयी निश्छल सरलता है। बहुत सधे अन्दाज में वे स्त्री दुनिया के शब्दों का प्रयोग करती हैं, जिससे .श्य का प्रभावान्विति बढ़ जाती है ''घुप्प घनेरी रात है। बंधी गांठ सी. गुमसुम आकाश काले कड़ाह से धरती पर आधा औधांया है। खिड़की से आसमान का जितना टुकड़ा आंखों की हद में आता है उसमें चांद नहीं हैं।''[14] स्त्री अनुभवी दुनिया में 'कड़ाह''धरती खिड़की', 'आसमान' चाद' का विशेष महत्व है इनके सार्थक प्रयोग देखे जा सकते हैं।

लवलीन की कथाभाषा कहीं–कहीं काव्यात्मकता का अतिरिक्त पुट लिए हुए दिखाई देती है उदाहरणार्थ ''प्रतीक्षा धैर्य की परीक्षा लेती रही। घरकुंज कुटीर की पत्तिया नुचती रही मधुकामिनी की पंखुरियां उगलियों की क्रूरता से बिखरती रहीं। दांत तिनके चबाते रहे। खोजबीन कर लाया गया केवड़े का फूल गुलदान में पानी बदलने की राह तकते– तकते सूख कर झर गया। कमरा बेतरतीब ही रहा। कुछ न कुछ भूलने पर मां की डांटे खाई जाती रहीं। छात्र–छात्रा एकटख ने कटाक्ष झेलते

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

रहे। विभागाध्यक्ष भिड़त होते–होते बची।जुमलों–हंसाइयों से मरहूम घर की चुप्पी माँ को सहमा गई आंखों के सामने बार–बार तिरते चेहरे को भुलाने के लिए किताबों के पन्ने उलटे गए। आंखों में बोए सपनों के बीज रात के अंधेरे में अनिद्रित निद्रा में फूल बन फूटते रहे... बूटियां लहराती रही। रंगीनियां दिखाती–भरमाती रही।"[15] यहां काव्यात्मक कथाभाषा का प्रवाह देखने लायक है। इसने दृश्य में प्रतीक्षा की तीव्रता को कई गुना बढ़ा दिया है। काव्यात्मकता यहां बांधा नहीं, बूस्टर है। यह लवलीन की कथाभाषा की खासियत है। कुल मिलाकर लवलीन अपनी कहानियों के जरिए अन्तर्वस्तु और रूप के धरातल पर स्त्री मुक्ति विमर्श में सार्थक हस्तक्षेप करती हैं और अपनी कहानियों के माध्यम से समाज के उन खोखले आदर्शों की पहचान करती रहीं, जो आर्थिक, सामाजिक, लैंगिक गैर–बराबरी को खाद–पानी पहुंचाते हैं तथा खोखली नैतिकता में उलझा कर मुक्ति पथ में बांधा बनते हैं। इन कथा–वस्तु का बारीकी से जायजा लेते हुए नये प्रतिमान स्थापित करती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. http://gadyakosh.org लवनीन/सवाल आपकी सामर्थ्य का है, मधु अरोड़ा द्वारा लिया गया साक्षात्कार।
2. लवलीन रास्ता आसान नहीं है। कहानी–संग्रह 'चक्रवात', नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली वर्ष 1999, पृ 70–71.
3. लवलीन 'रास्ता आसान नहीं है'। कहानी संग्रह 'चक्रवात', नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष– 1999, पृ0 74.
4. लवलीन–'रास्ता आसान नहीं है'। कहानी संग्रह 'चक्रवात' नीलकंठप्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष –1999 पृ0 76.
5. लवलीन–'रास्ता आसान नहीं है'। कहानी संग्रह 'चक्रवात' नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष –1999 पृ0 76–77.
6. लवलीन 'प्रेम से पहले' कहानी संग्रह 'चक्रवात', नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष– 1999 पृ0 15.
7. लवलीन –'प्रेम से पहले' कहानी संग्रह 'चक्रवात', नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष– 1999 पृ0 15.
8. लवलीन–'छिनांके' कहानी संग्रह 'चक्रवात', नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष– 1999 पृ0 36.
9. लवलीन–'छिनांके' कहानी संग्रह 'चक्रवात', नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष– 1999 पृ0 35.
10. लवलीन–'छिनांके'कहानी संग्रह 'चक्रवात', नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष– 1999 पृ0 40.
11. लवलीन–'छिनांके' कहानी संग्रह 'चक्रवात', नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष– 1999 पृ0 44.
12. लवलीन–'नहीं यह नहीं मुकाम', कहानी संग्रह 'चक्रवात', नीलकंठ प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष– 1999 पृ0 96.
13 http://gadyakosh.org लवलीन–'सवाल आपकी सामर्थ्य का है', मधू अरोड़ा द्वारा लिया गया साक्षात्कार।
14 लवलीन–'सिर्फ हमारे दिल में' कहानी संग्रह– 'चक्रवात' – पृ0 58.
15. लवलीन–'सिर्फ हमारे दिल में' कहानी संग्रह –'चक्रवात'–पृ0 69.

*****